कथा क्रम

जुलाई–सितम्बर, 2024

मूल्य – ₹ 50

कथासाहित्य
कला
एवं
संस्कृति
की
त्रैमासिकी

ISSN-2231-2161

वर्ष : 26 अंक : 101

जुलाई-सितम्बर 2024

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

कहानियां

16 **देवेन्द्र कुमार पाठक** : माहौल
23 **शिवेन्दु श्रीवास्तव** : सपना और शहर
31 **सोनी पाण्डेय** : पापा नहीं चाहिए
35 **रंजना गुप्ता** : मनोरमा
55 **आलोक कुमार सातपुते** : केंचुए
58 **अंशुश्री सक्सेना** : भैरवी
64 **पारमिता षड़ंगी** : अंधेरा
68 **डॉ. दाशरथि भूयां** : चक्रव्यूह में अभिमन्यु
अनुवाद-डॉ. भगवान त्रिपाठी

लघुकथाएं

15 **ज्ञानदेव मुकेश** : ईश्वर
30 **कमल** : सपने में सच या सच में सपना!
89 **राधेश्याम भारती** : शहर में गांव
112 **रमेश चोपडा** : सफल और सार्थक जीवन

कथा संवाद

05 **डॉ. नितिन सेठी की मधुरेश से बातचीत** : आलोचना : साहित्यिक, सांस्कृतिक संदर्भों में हस्तक्षेप

लेख

09 **कर्मेन्दु शिशिर** : ममता कालिया : सहजता और सादगी का कला-सौन्दर्य
40 **कंवल भारती** : स्वतंत्रता-पूर्व की अछूत केन्द्रित कहानियां
49 **प्रो. प्रज्ञा** : सांस्कृतिक दोआब की रसधार : माई (जिन लाहौर नई देख्या ओ जम्याइ नई' नया पाठ)

कविताएं

72 **गौरव भारती** : आत्महत्या, रात, नैराश्य
73 **भानु प्रकाश रघुवंशी** : भुजरियां, अकेलापन और तुम
74 **रोहित प्रसाद पथिक** : बुद्ध, 'ऋ' से जीव बनते हैं, ऋषि नहीं!
74 **इरा श्रीवास्तव** : आई एम सॉरी, धुएं की इबारतें, तांडव कब शुरू करोगे
76 **सीमा स्वधा** : जिजीविषा
76 **कला कौशल** : भूख
78 **अरिमर्दन कुमार सिंह** : मूक नायक

संस्मरण

79 **ब्रजेश** : राजेन्द्र यादव : पारदर्शी रचनाकार

कथा-शोध

85 **डॉ. दीपिका वर्मा** : दलित स्त्रियां, जीने की जिद्दी शर्त

बड़ा पर्दा

90 **तेजस पूनियां** : फ़िल्म समारोहों में पुरस्कृत फिल्मों की समीक्षाओं का प्रभाव

समीक्षाएं

95 **अनुपम त्रिपाठी** : वे पुल से गुज़र रही थीं- अतीत और वर्तमान के (कहानी संग्रह : सूर्यबाला)
98 **रजनी गुप्त** : परंपरा और आधुनिकता-आज के संदर्भों में प्रासंगिक सवालों से मुठभेड़ (आलोचना : संतोष चौबे)
101 **अजित कुमार** : हाशियाकृत अस्मिताओं से संवाद जन विकल्प संचयिता : प्रेम कुमार मणि ओर प्रमोद रंजन)
103 **धीरेन्द्र प्रताप सिंह** : हिंदी में अक्क महादेवी का अवतरण (दिगम्बर विद्रोहिणी-अक्क महोदवी : सुभाष राय)
106 **तसनीम खां** : वो किरदार, जो गायब हैं और ज़ाहिर भी... (कहानी संग्रह : हरीश पाठक)

मन्तव्य

108 **कथाक्रम का सौवां अंक** : चित्रा मुदगल, हरिराम मीणा, प्रज्ञा पाण्डेय, प्रज्ञा, कौशल किशोर, मदन मोहन, डॉ. चंद्रेश्वर, सूरज पालीवाल, विनोद दास
2 **सम्पादकीय** : परीक्षा घोटाले और सोशल मीडिया
आवरण : **बंसीलाल परमार**
रेखाचित्र : **राजेन्द्र परदेसी**

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com
e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 50 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-600 ₹, आजीवन 4000 ₹

संस्थाएं : वार्षिक-250 ₹, त्रैवार्षिक-700 ₹, आजीवन 5000 ₹

(kathakram SBI, Mahanagar Branch, Lucknow A/c 10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

परीक्षा घोटाले और सोशल मीडिया

जिस तरह वार्षिक परीक्षा के बाद हमें एक खालीपन की अनुभूति होती थी, कुछ ऐसा ही अहसास मुझे कथाक्रम के सौवें अंक प्रकाशित होने के बाद हुआ तो कतई वाजिब नहीं था क्योंकि इस कार्य की तुलना सालाना इम्तेहान से नहीं की जा सकती। सौवें अंक के बाद पत्रिका के प्रकाशन को लेकर कोई विचार या योजना भी नहीं थी, न ही कोई अन्य लक्ष्य था सिवाए इसके कि जब तक स्वास्थ्य, शक्ति और सामर्थ्य है, पत्रिका तो निकलनी ही है। वैसे भी इस विशिष्ट अंक के बाद जिस तरह की प्रतिक्रियाएं मुझे मिलीं, उससे मेरे मनोबल में जबरदस्त इजाफा हुआ है। इस बारे में विस्तार से लिखना जरूरी नहीं लगता। कुछ प्रतिक्रियाओं को हमने इस अंक में दिया है। हौसला-आफजाई के लिए मैं सुधी पाठकों, मित्र और वरिष्ठ रचनाकारों के प्रति अत्यंत आभारी हूं। अलबत्ता इससे यह धारणा तो पुष्ट हुई ही है कि अच्छी पत्रिकाओं, रचनाओं के पाठक हैं जो ढूंढ कर उसे पढ़ते हैं। कम से कम सौ लोगों ने सदस्य बनकर या अंक के लिए पैसा जमा कर पत्रिका की मांग की। एक पाठक दम्पती ने दस हजार रुपए खाते में जमा कर मुझे सूचित किया। आप सबका तहे दिल से शुक्रिया।

पिछले कुछ अर्से से हमारे देश में परीक्षाओं के घोटालों से देश का युवा वर्ग बुरी तरह त्रस्त और निराश है। हम सब परीक्षाओं के दौर से गुजरते हैं। मुझे स्मरण नहीं कि कोई परीक्षा रद की गई हो। लगभग साठ, पैंसठ साल के दौरान मैं परीक्षाओं में किसी न किसी रूप में इन्वॉल्व रहा हूं, पहले विधार्थी, लगभग तीन साल अध्यापक और परीक्षक, फिर अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई, और बाद में पुलिस अधिकारी के तौर पर विभागीय या भर्ती की परीक्षाएं आयोजित कराने में इस प्रक्रिया को करीब से देखा है। पर जो परिदृश्य पिछले कुछेक सालों में सामने आया है, वह अचरजपूर्ण के साथ बेहद दुखद तो है ही, मेरे अंदर रह रह कर भीषण आक्रोश पैदा करता है। एक के बाद एक परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की खबरें मिलती हैं जिसमें लोक सेवा आयोग की कतिपय परीक्षाएं भी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त राजस्थान में उप निरीक्षक, उत्तर प्रदेश में समीक्षा अधिकारी के साथ लगभग पच्चीस लाख अभ्यर्थियों की कान्सटेबिल भर्ती परीक्षा और अभी हाल की एमबीबीएस में दाखिले के लिए नीट परीक्षा जिसमें उच्चतम न्यायालय को भी हस्तक्षेप करना पड़ा है, कुछ दृष्टांत हैं। नीट की परीक्षा भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से बनाई राष्ट्रीय परीक्षा एजेन्सी (एन टी ए) द्वारा आयोजित की गई है। शुरू में तो एजेन्सी द्वारा इससे इंकार किया गया पर मीडिया के उजागर करने से उन्हें स्वीकार करना पड़ा और यह सफाई दी गई कि एक क्षेत्र विशेष में ही यह घोटाला हुआ है। यह सचमुच शर्मनाक है कि शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों के चयन के लिए बनाई गई संस्था द्वारा ऐसी गंभीर चूक और लापरवाही की गई। उससे भी अधिक लज्जाजनक यह है कि उसके पदाधिकारियों द्वारा अपने कार्य कलाप को लगातार जस्टीफाई करने की बेहियाई की। सरकार द्वारा भी उन्हें लगभग क्लीन चिट दे दी और संस्था के किसी अधिकारी के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई जिससे सरकार और उनके मंत्रालय पर कोई आंच न आए। यह सचमुच कष्टप्रद और हैरान करने वाला है। क्या सरकार नहीं समझती कि किसी परीक्षा के सम्पन्न होने के बाद उसके रद होने से परीक्षार्थियों को कैसा

मानसिक आघात लगता है, महीनों की तैयारी मटियामेट हो जाती है, उनके स्वप्न धूलधूसरित हो जाते हैं, भविष्य अंध ाकारमय लगता है और उन्हें अवसाद और तनाव के दौर से गुजरना पड़ता है। सामान्यत: दूसरी परीक्षा के आयोजन, उसके परिणाम व अन्य कार्रवाइयों में एक साल लगना मामूली बात है। नतीजतन एक और साल बेरोजगारी का दंश उनकी नियति बन जाती है जिसमें परिवार, परिजनों और परिचितों की उपेक्षा और अपमान तो शामिल है ही, उनकी खुद की मन:स्थिति कैसे नकारात्मक दौर से गुजरती है, किसी से छिपा नहीं है। किसानों की दुर्भाग्यपूर्ण आत्महत्याओं की चर्चा हम करते हैं जो बेहद जरूरी है पर क्या किसी ने छात्रों/युवाओं की आत्महत्या के आकड़े प्रस्तुत किए हैं। अकेले कोटा और आईआईटी जैसे शीर्ष संस्थानों में यह संख्या बेहद पीड़ा और संताप पैदा करने वाली है। इनके अलावा बेरोजगारी, परीक्षा में संतोषजनक प्रदर्शन न करने, खराब रिजल्ट आने, मांबाप की अपेक्षाओं पर खरा न उतरने आदि कारणों से मरने वाले युवाओं की संख्या कोई नहीं जानता। पूरे देश में एक वर्ष में यह संख्या तकरीबन दस, पंद्रह हजार से कम नहीं हो सकती।

युवाओं के अवसाद एवं निजी तनाव के साथ उनके गरीब परिवारों पर इसके वित्तीय भार का भी आकलन किया जाना चाहिए। दूर दराज से गाड़ियों, बसों, ट्रकों में लदफद कर बच्चे एक दिन पहले पहुंचते हैं, प्लेटफार्म, मैदानों, सड़कों पर सोते हैं, किसी तरह पेट भरते हैं और परीक्षा देकर जानवरों की तरह रेल या वाहनों में ठस कर वापस लौटते हैं। कई बार गंभीर हादसों का शिकार हो जाते हैं जैसे लखनऊ में ही कुछ वर्ष पूर्व रेलवे स्टेशन पर गंभीर हादसा हुआ था। ऐसे में परीक्षा का रद होना उनके लिए कैसा मानसिक आघात होता है, समझा जा सकता है।

और संयोग से यदि परीक्षा सकुशल सम्पन्न हो भी गई तो उसे न्यालालय में चुनौती देने का सिलसिला शुरू हो जाता है। उत्तर प्रदेश में साठ हजार से भी अधिक शिक्षकों की भर्ती का प्रकरण पिछले चार, पाच साल से हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के गलियारों में लहुलूहान हो रहा है। मुझे इस मामले की डिटेल्स नहीं मालूम इसलिए कोई टिप्पणी करना गलत होगा। पर अपने प्रशासनिक कार्यकाल और उस दौरान की गई अनेक भर्तियों के अनुभव से इतना पूरे दावे के साथ कह सकता हूं कि अधिकतर मामलों में असंतुष्ट अभ्यर्थी इसलिए न्यायालय की शरण में जाते हैं क्योंकि सम्बंधित विभाग द्वारा लापरवाही या किसी प्रभाव के चलते कुछ ऐसे नियम बना दिए जाते हैं या भर्ती की शर्तों में बदलाव कर दिया जाता है जो सरकार के ही किसी पूर्व स्वीकृत नियम का उल्लंघन होता है जिन्हें कोर्ट में चुनौती देकर उस प्रक्रिया को बाधित करा दिया जाता है। और सरकार सब कुछ भलिभांति जानने के बावजूद खुद पार्टी होने के कारण किसी के खिलाफ कार्रवाई करने से बचती है।

और अब पेपरों का लीक होना...। तकनीक ने जहां एक ओर जल्दी काम करने, मानवीय हस्तक्षेप से विलग रहने की सुविधा दी है, वहीं अपराधियों को भी घोटाले के तमाम टूल दिए हैं। उनके द्वारा जटिल तकनीक का बेजा प्रयोग कर पूरी परीक्षा व्यवस्था को तार तार कर दिया जाता है। क्या इसमें किसी की लापरवाही नहीं होती? जरूर होती है क्योंकि परीक्षा के प्रश्नपत्र कई हाथों और स्थानों से गुजरते हैं। जांच में तमाम गिरोहों के पर्दाफाश का दावा किया जाता है, गिरफ्तारियां होती हैं पर जिन अधिकारियों या कर्मियों पर इस परीक्षा का सकुशल सम्पन्न कराने का दायित्व होता है, उन पर शायद ही कभी कोई कार्रवाई होती है जबकि उनकी संलिप्तता या लापरवाही के बिना लीकेज संभव ही नहीं है। आम आदमी मानता है कि सरकार की संलिप्तता के बिना ऐसा घोटाला संभव नहीं है। अभी हाल में उत्तर प्रदेश में पूर्व निरस्त्र पुलिस कान्सटेबिल की भर्ती परीक्षा पुन: आयोजित की गई और वह सकुशल सम्पन्न हुई। किसी घोटाले, पेपर लीकेज या नकल अथवा अनियमितता की शिकायत/खबर नहीं आई। यही नागरिकों के विश्वास का कारण है कि यदि सरकार और उसके अधिकारी निष्पक्ष, नियमानुसार एवं निष्ठापूर्वक कोई कार्य करते हैं जो उसके सम्पादन में कोई बाधा नहीं आती।

इसलिए युवाओं के भविष्य को ध्यान में रखते हुए सरकार को इसपर गंभीरता प्रदर्शित करनी चाहिए। किसी प्रकार की गड़बड़ी होने पर लापरवाह संस्थाओं/अधिकारियों पर सख्त कार्रवाई करना जरूरी है।

आज के दौर में सोशल मीडिया की उपयोगिता पर

बात करना प्रासंगिक नहीं है। व्हाट्सअप, फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इन्स्टाग्राम आदि विभिन्न प्लेटफार्म इतनी सहजता, सरलता और सुविधा से उपलब्ध हैं कि लगभग अनपढ़ व्यक्ति को भी उनसे जुड़ने और प्रयोग में लाने में कोई दिक्कत महसूस नहीं होती। इनके निर्माताओं की बड़ी देन है यह। आज के युग की एक बड़ी उपलब्धि है यह जिसने आम आदमी को सशक्त बनाया है। महज सशक्त ही नहीं, इन प्लेटफार्म ने घर के अंदर रहने वाली गृहणियों और सुदूर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं/लड़कियों को आय का एक स्त्रोत भी उपलब्ध कराया है जो कुछेक साल पहले तक अकल्पनीय था।

पर हर सुविधा या तकनीक अपने साथ कुछ चुनौतियां भी प्रस्तुत करती है जिससे उसके दुरुपयोग की संभावना बनी रहती है। मैं इस विषय पर ज्यादा कुछ लिखने के लिए बहुत सक्षम या योग्य व्यक्ति नहीं हूं क्योंकि न मैं तकनीकी रूप से विशेष दक्ष हूं और न ही मैं सोशल मीडिया में खास सक्रिय हूं ट्विटर, इंस्टाग्राम से तो बहुत दूर हूं। पर इधर कुछ समय से फेसबुक की कुछ पोस्ट को लेकर दुखी और कुछ हद तक चिंतित जरूर होता हूं। कई लेखकों द्वारा अपनी फेसबुक पोस्ट में दूसरे रचनाकारों की रचनाशीलता को प्रश्नांकित किया जाता है, कभी व्यक्तिगत टिप्पणियां की जाती हैं जिसकी चर्चा आग की तरह फैलती है। अलबत्ता उसका कोई स्थाई प्रभाव नहीं होता। सच यह है कि उन पर पूरी गहनता और गंभीरता से किसी पत्रिका, पुस्तक में लिखने के बजाय फेसबुक में लिखने के पीछे कोई गंभीर रचनाकर्म नहीं बल्कि उनकी छीछालेदर करना होता है जो कतई उचित नहीं है। हम सब जानते हैं कि फेसबुक की पोस्ट कितनी अल्पजीवी होती है और कुछेक दिनों बाद ही वे कहां बिला जाती हैं, कोई नहीं जानता। ऐसी पोस्ट को अधिकांश पाठक गंभीरता से नहीं लेते। उन चटपटी पोस्ट का रसास्वादन कर महज उसका लुत्फ उठाते हैं। इसलिए यदि लेखक गंभीर है तो सोशल मीडिया प्लेटफार्म से इतर उस मुद्दे पर किसी पत्र पत्रिका में लिखा जाना चाहिए जिससे एक वृहत्तर पाठकवर्ग तक वह पहुंचे। तभी उसकी कोई उपयोगिता अथवा प्रासंगिकता है।

इसके साथ ही जिस तरह अपने व्यक्तिगत मामलों में इन प्लेटफार्म का दुरुपयोग किया जा रहा है, वह आपत्तिजनक और विचलित करने वाला है। ऐसे निजी मामलों, जिनका किसी और से कोई लेना देना नहीं है, को सार्वजनिक करना कहां तक उचित कहा जा सकता है। फिर ऐसी पोस्टों में प्रयोग की जा रही भाषा जो कभी शालीनता की सभी हदों को तोड़ती है, को देखकर मन अत्यंत क्षुब्ध हो जाता है।

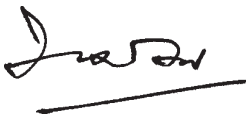

अगला अंक (102) : अक्टूबर-दिसम्बर-2024

कथा क्रम

मधुरेश, गोविन्द मिश्र, सैली बलजीत, बजरंग तिवारी, रमेश खत्री, रविकांत, रामनाथ शिवेंद्र, जयप्रकाश कर्दम, उमा मीणा, आदित्य अभिनव, हरभजन सिंह, अशोक प्रजापति, उपेन्द्र कुमार मिश्र, अल्पना सिंह व अन्य आदि।

चुनिन्दा कहानियां, लेख, संवाद, लघु कथाएं, समीक्षा, रपट एवं कला-संस्कृति-रंगमंच से जुड़ी सामग्री। पठनीय तथा संग्रहणीय।

आलोचना : साहित्यिक, सांस्कृतिक संदर्भों में हस्तक्षेप

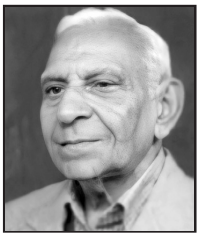

वरिष्ठ एवं प्रख्यात आलोचक
40 से अधिक आलोचना पुस्तकों के रचयिता। प्रमुख हैं- 'हिंदी कहानी अस्मिता की तलाश, राहुल का कथाकर्म, हिंदी कहानी का विकास, क्रांतिकारी यशपाल, हिंदी उपन्यास का विकास, अमृतलाल नागर- व्यक्तित्व और रचना संसार, कहानीकार जैनेन्द्र कुमार : पुनर्विचार, मार्क्सवादी आलोचना और शिवदान सिंह चौहान, आलोचक का आकाश आदि।
सम्मान : समय माजरा सम्मान, गोकुल चंद्र शुक्ल आलोचना सम्मान, प्रमोद वर्मा आलोचना सम्मान सहित कई सम्मानों से समादृत।
संपर्क : 25, विष्णु विहार, अजबपुर कलां, देहरादून-248121 मो. 9319838309

मधुरेश प्रख्यात कथा समालोचक हैं। पिछले लगभग साठ वर्षों से वह इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। उनकी समीक्षा पद्धति के संदर्भ में डॉ. नितिन सेठी से की गई बातचीत)

डा. *नितिन सेठी : सर्वप्रथम अपने बारे में कुछ बताइए।*

मधुरेश: यशपाल पर लहर दिसंबर 62 में प्रकाशित जिस टिप्पणी ने मुझे बाकायदा आलोचक बना दिया, उसे साठ वर्ष होने जा रहे हैं। इस बीच कथा-आलोचना में कुछ पहचान बनी है। यशपाल पर मौलिक और संपादित मेरी आधा दर्जन किताबें, देवकीनंदन खत्री से अमरकांत तक अनेक लेखकों पर मेरी पुस्तकें और मोनोग्राफ़ प्रकाशित हो चुके हैं। ये सब मिलाकर पचास से कम नहीं होंगे।

डॉ. नितिन सेठी: आपकी दृष्टि में आलोचना क्या है?

मधुरेश: साहित्यिक-सांस्कृतिक संदर्भों में किया गया हस्तक्षेप ही आलोचना है। सामाजिक संदर्भों में साहित्य की व्याख्या के माध्यम से एक ओर यदि हम साहित्य को समझने की कोशिश करते हैं, वहीं दूसरी ओर अपने समय और संस्कृति को भी। आलोचना हमें बताती है कि हम कैसा समाज बना रहे हैं।

डॉ. नितिन सेठी: एक रचनाकार और एक पाठक के बीच में आप एक आलोचक का स्थान कैसे, कहां और कितना निर्धारित करते हैं?

मधुरेश: बहुत कम रचनाकार हैं जो अपने समय की आलोचना से संतुष्ट रहे हैं। आलोचना के प्रति इस असंतोष के कारण ही जब-तब वे आलोचना को एक गैर-ज़रूरी उद्यम भी घोषित करते रहे हैं। लेकिन सारे विरोध और असंतोष के बावजूद आलोचना है और रहेगी। आलोचना संवाद के माध्यम से लेखक और पाठकों के बीच एक पुल तैयार करती है। जायसी पर शुक्ल जी की आलोचना या कबीर पर हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना के बाद हम उन कवियों की एक बेहतर समझ हासिल करते हैं। रचना के दबे-ढके और अंधेरे कोनों को उजागर और प्रकाशित करना भी आलोचना के काम का एक हिस्सा है। रचना और लेखक के पुल से ही आलोचना हमें अपने समय और संस्कृति के संसार में ले जाती है।

डॉ. नितिन सेठी: समीक्षा हेतु किसी पुस्तक को चुनने की क्या कसौटियां हैं आपकी?

मधुरेश: समीक्षा के लिए रचना के चुनाव की कोई सर्वस्वीकार्य और सर्वमान्य कसौटी मेरे पास नहीं है। शुरू में संपादकों के आग्रह पर ही अधिकतर लिखना हुआ। कुछ पहचान बन जाने पर अपनी पसंद की किताबें भी संपादकों से मिलने लगीं। लेखक और रचना की विषयवस्तु ही सामान्यत: इस चुनाव का आधार होती है। जब-तब किसी लेखक के आग्रह पर भी लिखना हुआ है। लेकिन आग्रह चाहे लेखक का हो या संपादक का, लिखा वही है जो रचना से गुजरकर प्रभाव बना है। ईमानदार और वस्तुनिष्ठ समीक्षा ही विश्वसनीय समीक्षा होती है।

डॉ. नितिन सेठी: समकालीन लेखन पर क्या टिप्पणी करना चाहेंगे?

मधुरेश: समकालीन लेखन का परिदृश्य खूब सक्रिय और